एक सुखद आश्चर्य...

हाल ही में पेश हुए आम बजट में तंबाकू उत्पादों को महंगा कर दिया गया है। मकसद है इन उत्पादों से लोग दूरी बनाएं। इन प्रयासों के अच्छे परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। भारत में सिगरेट की खपत में गिरावट आ रही है। इसे एक सुखद संकेत माना जा सकता है। स्वास्थ्य मंत्रालय के हालिया आंकड़ों के मुताबिक देश में 2015-16 में लगभग 10 अरब सिगरेट कम बिके हैं। इस समयावधि के दौरान सिगरेट का उत्पादन 117 अरब से घटकर 105.3 अरब सिगरेट रह गया। बढ़ती नशाखोरी के बीच ये आंकड़े समाज और सरकार दोनों के लिए आशा की नई किरण बन सकते हैं।

गुपचुप हुई गिरावट

बढ़ती नशाखोरी पूरे देश के लिए एक बड़ी चिंता बनती जा रही है। युवा और किशोर नशे के सर्वाधिक गिरफ्त में दिखते हैं। इस आयु में आधुनिक और अलग दिखने की सहज प्रवृत्ति होती है और नशे का कारोबार करने वाली कंपनियों ने बड़ी चालाकी से नशे को आधुनिक सोच और स्वच्छंद जीवनशैली से जोड़ दिया है। इसके कारण युवाओं में नशाखोरी की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। रही सही कसर अन्य देशों से होने वाली नशे की तस्करी ने पूरी कर दी है। नशे के बढ़ते चलन के बीच अच्छी खबर यह है कि भारत में बीते दो सालों में सिगरेट की खपत में तेजी से कमी आई है। यह खबर एक सुखद आश्चर्य पैदा करती है क्योंकि खपत गिरावट बहुत गुपचुप हुई है।

यह भी है वजह

संभवतः सरकार द्वारा सिगरेट के पैकेटों पर इसके नुकसानदेह होने की सूचना बड़े रूप में छापे जाने के कारण समाज में जागरूकता पैदा हो रही है। पहले शाब्दिक और छोटे रूप में यह सूचना लिखी जाती थी कि 'धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' लेकिन अब इस सूचना के साथ कैंसर की स्थिति को दर्शाता एक बड़ा चित्र भी निकोटिन की उपस्थिति वाले उत्पादों पर लगता है। यह चित्र उपभोक्ताओं की मानसिकता पर गहरा प्रभाव छोड़ने में सफल रहा है। आंकड़ों से साफ संकेत मिलता है कि सदाबहार माना जाने वाला सिगरेट का बाजार भारत में मंदी के दौर से गुजर रहा है। कभी सिगरेट के हानिकारक प्रभावों और कंपनियों की रणनीति की तरफ संकेत करते हुए डब्ल्यूएचओ के एक निदेशक ने कहा था कि 'सिगरेट में सिर्फ उतना ही निकोटिन डाला जाता है।

भगवान शिव ने की थी श्रीगणेश की पूजा

शास्त्रों के अनुसार भगवान ब्रह्मदेव ने भविष्यवाणी की थी कि हर युग में श्री गणेश विभिन्न रुपों में अवतरित होंगे। कृतयुग में विनायक, त्रेतायुग में मयूरेश्वर, द्वापरयुग में गजानन एवं धूम्रकेतु नाम से कलयुग में अवतार लेंगे। गणपति जी के आठ प्रमुख मंदिरों में से एक है महागणपति मंदिर जो रांजणगांव में पुणे अहमदनगर राजमार्ग पर 50 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। इतिहास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है की यह मंदिर 9वीं और10वीं सदी के मध्य होंद में आया। शिव जी ने त्रिपुरासुर के साथ युद्ध करने से पूर्व गणेश जी की पूजा की थी तत्पश्चात मंदिर का निर्माण करवाया। तब यह स्थान मणिपुर के नाम से जाना जाता था पर आज इसे लोग रांजणगांव कहते हैं। शिव जी ने दैत्यराज त्रिपुरासुर को गणेश जी के आशीर्वाद से पराजित किया था इसलिए इन्हें त्रिपुरारी महागणपति के रूप में भी पूजा जाता है। इतिहास में हुए हमलों के डर से गणपति जी का वास्तविक स्वरूप मंदिर के एक तहखाने में छिपाया हुआ है। मंदिर में विराजित गणेश जी की प्रतिमा को माहोतक भी कहा जाता है क्योंकि इसकी 10 सूंड और 20 हाथ हैं। गणेश जी की प्रतिमा बैठे आसन में दिखाई देती हैं और उनके ईर्द-गिर्द रिद्धी-सिद्धी की प्रतिमाएं हैं। भव्य प्रवेश द्वार में अलंकृत महागणपति मंदिर पूर्वमुखी है। जय और विजय दो द्वारपाल हैं जिनकी प्रतिमाएं मुख्य द्वार पर अवस्थित हैं। भोर फटते ही सूरज की पहली किरण सीधी प्रतिमा पर पड़ती है। श्री अष्टविनायक गणपति स्वरूपों में महागणपति गणेश जी का सबसे शक्तिशाली प्रतिरूप है।

भगवान के दिए तोहफे...

विदुर-नीति जितनी उपयोगी महाभारत काल में थी उतनी आज भी है। ऐसा भी कहा जा सकता है की इन नीतियों के अनुसार कुछ ऐसी चीजें हैं जो भगवान का दिया तोहफा होती हैं। जिस व्यक्ति के पास यह होती हैं उससे अधिक सुख और समृद्ध इस धरती पर कोई ओर नहीं हो सकता। जीवन यापन करने के लिए काम की आवश्यकता होती है। जिस व्यक्ति के पास कमाई के पर्याप्त साधन होते हैं। वह ईमानदारी से मेहनत करके अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकता है। काम के अभाव में जीविका चलाना असंभव है। रोग और शोक व्यक्ति को तन मन से कमजोर बना देते हैं। बार-बार बीमार पड़ने वाले व्यक्ति का धन तो जाता ही है साथ ही उसे अंदर से तोड़ भी देता है। निरोगी काया संसार के तमाम सुखों से बढ़कर है। जिस व्यक्ति की पत्नी मृदुभाषी होती है, वह धरती पर जन्नत का आनंद भोगता है। उसका घर स्वर्ग के समान होता है। देवी सरस्वती के साथ-साथ महालक्ष्मी भी उसके आलय में वास करती हैं। भाग्यवान है वह व्यक्ति जिसकी संतान उसके कहे अनुसार कार्य करती है। अच्छी संतान कुल के नाम में चार चांद लगा देती है, वही बुरी संतान कुल का नाश कर देती है। ज्ञान में ऐसी शक्ति है जो रंक को भी राजा बनाने का सामर्थ्य रखती है। इससे न कोई छीन सकता है न चोरी होने की आशंका रहती है। जीवन में जैसी भी परिस्थितियां आएं, ज्ञान से कुछ भी अर्जित किया जा सकता है। जो पत्नी अपने पति को सच्चे दिल से मान देती है उसे धर्म ग्रंथों में पतिव्रता कहा जाता है। वह पत्नी अपने पति के मन भाती है जो पति की भावनाओं का सम्मान करती है और अपने घर की सभी जिम्मेदारियों को पूरा करती है।

जीवन का जरूरी तत्व क्षमा...

भूल करना मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है; हम सभी भूल करते हैं, लेकिन उन्हें दोहराने का कोई औचित्य नहीं हो सकता। हमें अपनी भूल का अहसास हो गया है यह दिखाने की केवल दो विधियां हैं। पहली विधि है कि भूल को न दोहराएं और दूसरी एक सच्ची क्षमा याचना द्वारा। सही ढंग से क्षमा मांगना कोई विशेष कला या ज्ञान नहीं। यह तो केवल इस पर निर्भर है कि आप स्पष्ट रूप से सत्य बोल पाते हैं कि नहीं। जब हमें वास्तव में अपने कार्य पर पछतावा होता है, तो सही शब्द स्वतः ही बाहर आने लगते हैं और क्षमा मांगना अत्यंत सरल हो जाता है।

क्षमा याचना विश्वास की एक पुनःस्थापन है। इसके द्वारा आप यह कह रहे हैं कि मैं ने एक बार आपका विश्वास तोड़ा है किंतु अब आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं और मैं ऐसा फिर कभी नहीं होने दूंगा। जब हम एक भूल करते हैं, तो दूसरे व्यक्ति के विश्वास को झटका लगता है। अधिकतर सकारात्मक भावनाओं की नींव विश्वास ही होती है। उदाहरणार्थ जब आप किसी से प्रेम करते हैं, तो आप उन पर विश्वास करते हैं कि वे वास्तव में वैसे ही हैं जैसा वे स्वयं को दर्शाते हैं किंतु जब वे उसके विपरीत कार्य करते हैं, तो आप का विश्वास टूट जाता है। इस विश्वासघात से आप को बहुत कष्ट होता है और यह दूसरे व्यक्ति के प्रति आप की भावनाओं को भी प्रभावित करता है। यदि आप अपराध को दोहराने का विचार कर रहें हैं, तो ऐसी क्षमा याचना विश्वसनीय नहीं है। उदाहरणार्थ एक टूटे हुए घड़े को ले लीजिए। यदि आप सावधानी और सबूरी से प्रयत्न करें तो संभवतः एक बार उसे जोड़ सकते हैं किंतु उसे फिर से तोड़ने पर उसे जोड़ना अधिक कठिन या लगभग असंभव हो जाता है। इसी प्रकार यदि आप किसी के विश्वास को तोड़ते हैं संभवतः वह आपको एक बार क्षमा कर सकते हैं, लेकिन यदि आप ऐसा फिर से करते हैं तो आप उनसे क्षमा की आशा नहीं कर सकते। इसलिए, एक निष्ठाहीन क्षमा याचना सम्पूर्ण रूप से व्यर्थ है।

निष्कपट क्षमा याचना

क्षमा याचना विश्वसनीय तभी होती है जब आप यह ठान लें कि आप अपने अपराध को दोहराएंगे नहीं और जब आप कोई बहाना या औचित्य नहीं देते हैं। आप अपने कार्य का पूरा उत्तरदायित्व लेते हैं और सच्चे दिल से आप क्षमा मांगते हैं। पश्चाताप की भावना से रहित क्षमा याचना व्यर्थ है। वास्तव में, इससे दूसरे व्यक्ति को और अधिक कष्ट होगा। अक्सर लोग कहते हैं, मुझे क्षमा करें परंतु मैंने ऐसा सोच कर यह काम किया था या मुझे क्षमा करें परंतु मैं ने यह कार्य इस कारण किया था या मुझे क्षमा करें यदि मेरे कारण आप को कोई चोट पहुंची हो। यह क्षमायाचना नहीं केवल बहाना है। एक सच्ची क्षमा याचना में यदि और परंतु जैसे शब्दों का कोई स्थान नहीं होता। यह कहना कि आपने ऐसा क्यों किया इसका भी कोई अर्थ नहीं। सर्वश्रेष्ठ क्षमा याचना वह है जहां आप यह पूर्ण रूप से समझें, महसूस करें तथा स्वीकार करें कि आपके कार्यों ने अन्य व्यक्ति को ठेस पहुंचाई है। एक कारण या औचित्य दे कर अपनी क्षमा याचना को दूषित न करें। यदि आप सच्चे दिल से क्षमा नहीं मांगते हैं तो आप अपनी क्षमा प्रार्थना का नाश कर रहे हैं। इससे दूसरे व्यक्ति को और अधिक कष्ट होगा। आप एक क्षमा याचना अथवा एक बहाने में से केवल एक को ही चुन सकते हैं, दोनों को नहीं। एक सच्ची एवं निष्कपट क्षमा याचना वह होती है जिसमें आप अपने अपराध को पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं।

क्षमा मांगना क्यों जरूरी

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को किसी ने पत्थर का बना सुंदर पेन भेंट किया। उनका उस पेन से बहुत लगाव हो गया था। वे अपना लेखन कार्य उसी पेन से करते थे। काम खत्म होने के बाद स्वयं उसे संभाल कर मेज पर रख देते थे। एक दिन उनके ऑफिस का सेवक उनकी मेज की सफाई कर रहा था। सफाई करते समय अचानक उससे वह पेन नीचे गिर गया और टूट गया। स्याही के कुछ छींटे कमरे में बिछे कालीन और महामहिम राष्ट्रपति के कपड़ों पर जा गिरे। राष्ट्रपति को उसकी लापरवाही पर क्रोध आ गया और उसको डांटते हुए उसे काम से हटा कर दूसरी जगह भेज दिया। सेवक चला तो गया, किन्तु डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बैचैन हो उठे। अंदर ही अंदर उनका मन उन्हें बुरा-भला कहने लगा। वे उदास हो गए। इसी बीच कई मिलने वाले लोग आए, किन्तु उनकी उदासी दूर नहीं हुई। उन्हें अपने सेवक से बुरा भला कहने पर बड़ी ग्लानी हो रही थी। सेवक से अनजाने में हुई गलती पर उसे डांटना उन्हें उचित नहीं लगा। वे उससे क्षमा मांगना चाहते थे। दूसरे दिन उन्होंने सेवक को बुलाया और उससे क्षमा याचना करने लगे। भारत का राष्ट्रपति एक सेवक से क्षमा मांगे, यह देखकर सेवक श्रद्धा से उनके चरणों में झुक गया। उनकी आंखे भर आई। उन्होंने उसी दिन उस सेवक को फिर से कार्य पर रख लिया। जिंदगी में हम लोग भी कई बार छोटी-छोटी बातो पर गुस्सा हो जाते है और दुसरे की थोड़ी सी गलती करने पर उससे उलझने लगते है और क्रोधित हो जाते हैं पर क्या ऐसा करना उचित है। सत्य तो यह है की क्रोध हमेशा ही हमारा स्वयं का ही नुकसान करता है और इससे समस्या का समाधान नहीं निकलता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन की यह कहानी हमें सीख दे जाती है की एक उच्च चरित्र का आदमी स्वयं की गलती होने पर माफी मांगने से भी नहीं कतराता। इसलिए अपने जीवन में कभी भी छोटी-छोटी बातो को लेकर गुस्सा न करे और जीवन को प्रसन्नता से जिएं।

क्षमा मांगना और क्षमा करना

बिना शर्त पूर्णरूप से क्षमायाचना करें और क्षमा भी करें। लाभ-हानि या किसी निहित स्वार्थ से ऊपर उठकर क्षमा मांगने और क्षमा देने से क्षमा निष्काम कर्म की कोटि में आ जाती है और निष्काम कर्म सबसे उत्तम माना गया है। जो लोग न क्षमा मांगना जानते हैं और क्षमा करना नही तो वे अपने लिए इस धरती पर ही नरक की सृष्टि कर लेते हैं। क्षमाशील व्यक्तित ही इस धरती पर स्वर्ग की सृष्टि कर जीतेजी स्वर्ग भोगते हैं। क्षमा कब करें? यदि कोई व्यक्ति क्षमा मांगता है, तो क्षमा न करना अपराध जैसी स्थिति हो जाती है। क्षमा मांगने पर मांगने वाला अपनी गलती को स्वीकार कर अपराधबोध से मुक्त हो जाता है, लेकिन क्षमा न करने वाला उसकी पीड़ा से सुलगता रहता है। अतः किसी के क्षमा मांगने पर क्षमा कर देना उसके स्वयं के लिए एक उपयोगी क्षण है। कोई अपनी गलती के लिए क्षमा न मांगे तो भी क्या उसे क्षमा किया जा सकता है? यह क्षमा करने वाले पर निर्भर है, पर क्षमा न करने पर क्षमा न करने वाला भी तो भुगतेगा। क्षमा मांगने पर भी और क्षमा न मांगने पर भी। बस थोड़ी सूझबूझ की जरूरत है। दूसरा क्षमा मांगे या न मांगे आप तो किसी भी तरह उसे क्षमा कर घातक मनोभावों से मुक्त हो जाइए। आप क्यों दूसरे की गलती का बोझ अपने मन में ढो रहे हैं? क्षमा न मांगने पर भी किसी को सही तरीके से उसकी गलती का एहसास कराकर क्षमा कर देने से गलती के शीघ्र परिष्कार की अपेक्षा की जा सकती है। क्षमा करना दूसरे को सुधरने का अवसर प्रदान करना ही है, अतः यह अनिवार्य भी है। अधूरी या आंशिक क्षमा का भी कोई अर्थ नहीं। भगवान महावीर इसलिए बाहुबली कहलाए, क्योंकि उन्होंने क्षमा को जीवन का अनिवार्य तत्व स्वीकार कर अपनाया। उनके बतलाए हुए मार्ग को धर्म कहा गया, क्योंकि इसमें क्षमा की प्रधानता थी। सम्राट अशोक इसलिए महान नहीं कहलाए कि उन्होंने कलिंग युद्ध में विजय प्राप्त की, अपितु ऐसे धर्म की शरण में चले गए जिसमें क्षमा की प्रधानता थी। ईसा मसीह ने उन लोगों को भी क्षमा कर दिया, जिन्होंने ईसा मसीह को सूली पर टांग दिया और ईसा मसीह प्रभु बन गए। उनके द्वारा दिखलाया गया मार्ग एक नया धर्म बन गया। क्षमा के अभाव में न कोई व्यक्ति वीर है और न कोई धर्म पूर्ण है। शत्रु और मित्र शब्दों का अस्तित्व वास्तव में 'क्षमा' के अभाव में ही है। जहां क्षमा है, वहां शत्रुता अथवा द्वेष का क्या काम?

वैर बिन, ये चार दिन

वैर मनुष्य के मन रूपी सरोवर में रहने वाली एक ऐसी गंदी मछली है जो सारे सरोवर को गंदा कर देती है। अगर हमारे मन में वैर, कपट, कलह और कटुता है, प्रतिशोध की भावना है तो हमने अपने मन के सरोवर में गंदी मछली को जन्म दे दिया है। जब तक यह गंदी मछली रहेगी हम अपने जीवन में दुर्गंध से भरे रहेंगे। वैर से वैर मिटता नहीं है। हम अपने विरोधी को भी प्रेम दें, उसके प्रति भी दोस्ती के भाव रखें, निंदा करने वाले व्यक्ति की भी प्रशंसा करें तो हम पाएंगे कि एक दिन वे हमारे साथ हो जाएंगे। जिसके मन में कठोरता, कटुता, कलह और संघर्ष की भावना रहती है उसके चित्त में कभी किसी के प्रति प्रेम नहीं होता। उसके प्रेम के सरोवर का पानी सूख जाता है और उसमें दरारें पड़ जाती हैं। स्नेह की कमी से मेलजोल में कटौती होती है। वह स्वयं तो दुखी रहता ही है किंतु अपनी उपस्थिति से आसपास के लोगों को भी दुखी करता है। अपने क्रोध और अहंकार से स्वयं को तो दंडित करता ही है, दूसरों को भी दंडित करने की सोचता रहता है। इतिहास में खून की जो नदियां बहती रही हैं, उनका एकमात्र कारण प्रतिशोध और बदले की भावना रही है। चिरकाल तक मनुष्य के मन में प्रतिशोध की भावना लहराती है। एक बार हम अपने मन को टटोलें, किसी धार्मिक ग्रन्थ की तरह ईमानदारी से अपने मन को पढ़ें। अपनी विचारस्थिति को पढ़े कि कहीं उसके भीतर कोई वैर तो नहीं है। चार दिन की छोटी-सी जिंदगी में दो दिन तो बीत गए और शेष दो दिन भी बीत जाएंगे - फिर किस बात का वैर-विरोध! छोटी-छोटी बातों की गांठें न बांधें। जैसे गन्ने की गांठ में एक बूंद भी रस नहीं होता वैसे ही जिस आदमी के मन में गांठें बन जाती हैं, उसका जीवन भी नीरस हो जाता है।

प्रेम प्रभावी हो ...

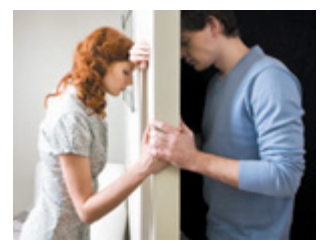

औरों के वचनों से मन को प्रभावित न करें, औरों की टिप्पणी से मन को कुंठित न करें, अपने मन को विचलित न करें। बुद्ध किसी गांव से जा रहे थे। गांव के लोगों ने उनकी बहुत निंदा की, अपशब्द कहे। गांव वाले जितना बुरा बोल सकते थे, बोले। जब वे चुप हो गए तो बुद्ध ने कहा - क्या अब मैं अगले गांव चला जाऊं? लोग दंग रह गये कि हमने इन्हें इतना भला-बुरा कहा और ये जरा भी प्रभावित नहीं हुए बल्कि मधुर मुस्कान से पूछ रहे हैं कि क्या मैं अगले गांव चला जाऊं? लोगों ने पूछा, हमारी गालियों का क्या हुआ? बुद्ध ने कहा - मैं जब पिछले गांव में था तो लोग मेरे पास मिठाइयां लेकर आए थे। उन्होंने मुझे मिठाइयां देने की बहुत कोशिश की और तरह-तरह के प्रयास भी किए लेकिन मैंने किसी की मिठाई स्वीकार नहीं की। आप मुझे बताएं कि वे मिठाइयां फिर किसके पास रहीं? लोगों ने कहा- यह तो बच्चा भी बता देगा कि मिठाइयां उन्हीं के पास रहीं। बुद्ध ने कहा- तुम्हारी बात तुम्हें मुबारक! पीछे के गांव वालों ने मिठाइयां दी, मैंने वे नहीं लीं अतः वे उन्हीं के पास रहीं, वैसे ही आप लोगों ने मुझे गालियां दीं और मैंने नहीं लीं तो आप लोगों की चीज आप ही के पास रह गई। जिनके मन में प्रेम और शांति का निर्झर बहा करता है वे ही लोग अप्रियता, कलह, कटुता और विरोध का वातावरण बनने पर भी उसे प्रेम और क्षमा में ढाल लिया करते हैं।

हर हाल में खुश रहो

प्रसन्न रहो, हर हाल में खुश रहो। प्रसन्नता आपके सौंदर्य को द्विगुणित करती है। आप प्रेम में, वात्सल्य में जीकर तो देखें। जितने आप जवानी में सुंदर हैं उससे भी अधिक बुढ़ापे में सुंदर दिखाई देंगे। क्या आपने गांधीजी का जवानी और बुढ़ापे का चित्र देखा है? तीस वर्ष की आयु में वे जैसे दिखते थे, सत्तर वर्ष की आयु में उससे कहीं अधिक सुंदर दिखने लगे थे। जैसे-जैसे व्यक्ति के विचार सुंदर होते जाते हैं उसका भीतरी सौंदर्य चेहरे पर प्रकट होने लगता है। आपने महर्षि अरविंद का वृद्धावस्था का चित्र देखा है? उनके चेहरे का ओज, तेज और सौंदर्य कितना अधिक आकर्षक था? बुढ़ापे में उसी का चेहरा बदसूरत होता है जिसके विचार सुंदर नहीं होते। जिसकी विचारदशा सुंदर होती है, वह जैसे-जैसे बूढ़ा होता है, उसके चेहरे पर सौन्दर्य छलछलाने लगता है। किसी के कल्याण के लिए अपनी ओर से जो कुछ भी हो सके, कर दो। अगर नहीं कर सको तो सहज रहो, अपने मन को हमेशा निर्मल रखो। वैर-विरोध और प्रतिशोध उसी को अच्छे लगते हैं जिसने अभी तक प्रेम और क्षमा का स्वाद नहीं चखा है। दुनिया में दो कठिन कार्य हैं- किसी से क्षमा मांगना या किसी को क्षमा करना। परन्तु ये दोनों ही कार्य आपको अनेक कठिनाईयों से मुक्ति दिलाते हैं। शुरू-शुरू में माफी मांगना हमें जहर पीने के समान लगता है परन्तु परिणाम में अमृत हो जाता है। क्षमा मांगना यदि प्रायश्चित का सुंदर व अच्छा रूप है तो क्षमा करना बड़प्पन का प्रतीक। इसमें आप न केवल मन की उलझन से मुक्त होंगे अपितु अपनी शक्ति और शांति में बढ़ोतरी करने में भी सफल हो जाएंगे।

हस्ताक्षर व्यक्तित्व का आईना...

हस्ताक्षर व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण आइना है। व्यक्ति के हस्ताक्षर में उसके व्यक्तित्व की सभी बातें पूर्ण रूप से दिखाई देती हैं। हस्ताक्षर या लिखावट से हमारा सीधा संबंध मानसिक विचारों से होता है यानी हम जो सोचते हैं करते हैं जो व्यवहार में लाते हैं वह सब अवचेतन रूप में कागज पर अपनी लिखावट व हस्ताक्षर के द्वारा प्रदर्शित कर देते हैं। यहां यह जानना भी जरूरी है कि हस्ताक्षर के अध्ययन से व्यक्ति अपने भविष्य व व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है और हस्ताक्षर में दिखाई देने वाली कमियों को दूर करते हुए अपने हस्ताक्षर के साथ-साथ अपना भविष्य व व्यक्तित्व भी बदल सकता है।

पहला अक्षर बड़ा

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर का पहला शब्द काफी बड़ा रखता है, वह व्यक्ति उतना ही विलक्षण प्रतिभा का धनी, समाज में काफी लोकप्रिय व उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है। हस्ताक्षर में पहला शब्द बड़ा व बाकी के शब्द सुंदर व छोटे आकार में होते हैं ऐसा व्यक्ति धीरे-धीरे उच्च पद प्राप्त करते हुए सर्वोच्च स्थान पाता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में पैसा बहुत कमाता है। कई भवनों का मालिक बनता है व समाज में काफी लोकप्रिय होता है किन्तु संकोची स्वभाव का उत्तम श्रेणी का विद्वान भी होता है। वह अपने कुल का नाम काफी ऊंचा करता है।

अस्पष्ट हस्ताक्षर

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर इस प्रकार से लिखता है, जो काफी अस्पष्ट होते हैं तथा जल्दी-जल्दी लिखे गए होते हैं वह व्यक्ति जीवन को सामान्य रूप से नहीं जी पाता, हर समय ऊंचाई पर पहुंचने की ललक लिए रहता है। इस प्रकार का व्यक्ति राजनीतिज्ञ, अपराधी, कूटनीतिज्ञ या बहुत बड़ा व्यापारी बनता है। जीवन आपाधापी में व्यतीत करने के कारण वह समाज से कटने लगता है तथा लोगों की उपेक्षा का शिकार भी बनता है। वह व्यक्तिगत रूप से पूर्ण सम्पन्न तथा इनका वैवाहिक जीवन कम सामान्य रहता है। वह धोखा दे सकता है, परंतु धोखा खा नहीं सकता है। यह इसकी विशेषता है।

काफी छोटे हस्ताक्षर

जो व्यक्ति हस्ताक्षर काफी छोटे व शब्दों को तोड़-मरोड़ कर उनके साथ खिलवाड़ करता है जिसके फलस्वरूप हस्ताक्षर बिल्कुल पढ़ने में नहीं आता है वह व्यक्ति बहुत ही चालाक होता है। अपने फायदे के लिए किसी का भी नुकसान करने व नुकसान पहुंचाने से नहीं चूकता। पैसा, धन भी गलत रास्ते से कमाता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति एवं अपराध के क्षेत्र में काफी नाम कमाता है।

हस्ताक्षर के नीचे दो लाइनें

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर के नीचे दो लाइनें खींचता है, वह व्यक्ति भावुक होता है। पूरी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाता, मानसिक रूप से थोड़ा कमजोर होता है। इसके जीवन में असुरक्षा की भावना रहती है। जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर के शब्दों को काफी घुमाकर, सजाकर प्रदर्शित करके करता है वह व्यक्ति किसी न किसी हुनर का मालिक अवश्य होता है यानी कलाकार, गायक, पेंटर, व्यंग्यकार आदि। ऐसे व्यक्तियों का समय जीवन के उत्तरार्द्ध में अच्छा होता है।

हस्ताक्षर के नीचे एक बिंदू

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर में नाम का पहला अक्षर सांकेतिक रूप से तथा उपनाम पूरा लिखता है तथा हस्ताक्षर के नीचे बिंदू लगाता है, ऐसा व्यक्ति भाग्य का धनी होता है। मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, समाज में पूर्ण सम्मान प्राप्त करता है। ईश्वरवादी होने के कारण इन्हें किसी भी प्रकार की लालसा नहीं सताती, इसके फलस्वरूप जो भी चाहता है स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। वैवाहिक जीवन सुखी व संतानों से भी सुख प्राप्त होता है।

हस्ताक्षर के नीचे दो बिंदू

अपने हस्ताक्षर के अंतिम शब्द के नीचे दो बिंदू रखने वाला व्यक्ति विलक्षण प्रतिभा का धनी होता है। ऐसा व्यक्ति जिस क्षेत्र में जाता है काफी प्रसिद्धि प्राप्त करता है और ऐसे व्यक्ति से बड़े-बड़े लोग सहयोग लेने को उत्सुक रहते हैं। जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर स्पष्ट लिखते हैं तथा हस्ताक्षर के अंतिम शब्द की लाइन या मात्रा को इस प्रकार खींच देते हैं जो ऊपर की तरफ जाती हुई दिखाई देती है, ऐसे व्यक्ति शिक्षक , विद्वान, बहुत ही तेज दिमाग के होते हैं। ऐसे व्यक्ति दिल के बहुत साफ होते हैं, हरेक के साथ सहयोग करने के लिए तैयार रहते हैं। मिलनसार, मृदुभाषी, समाजसेवक, परोपकारी होते हैं। वे कभी किसी का बुरा नहीं सोचते, सामने वाला व्यक्ति कैसा भी क्यों न हो, हमेशा उसे सम्मान देते हैं। सर्वगुण सम्पन्न होने के बावजूद काफी पैसा व पूर्ण सम्मान प्राप्त होता है।

यह है अलग तरह का म्यूजिक...

ईडीएम यानी इलेक्ट्रॉनिक डांस म्यूजिक एक अलग तरह का म्यूजिक है जो सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक इंस्ट्रूमेंट के जरिए तैयार किया जाता है। ज्यादातर यह सिर्फ कंप्यूटर म्यूजिक सॉफ्टवेयर की मदद से ही संचालित किया जाता है। मौजूदा दौर में आउटडोर क्लबों में होने वाले आयोजन में यही म्यूजिक चलन में आता है।

लोगों की अभी यही धारणा है कि भारत में ईडीएम का प्रवेश अभी-अभी हुआ है। लेकिन हकीकत यह है कि संगीत की यह विधा बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है और भारत इस मायने में कहीं भी पीछे नहीं है। दुनिया के करीब 250 से ज्यादा विदेशी कलाकार वर्षभर में भारत का दौरा करते हैं। इस क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले जर्मन मूल के अमेरिकन संगीत निर्माता मार्कुस शुल्ज ने कुछ समय पहले मुंबई, हैदराबाद, दिल्ली और पुणे में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे। तब उन्होंने कहा था भले ही मौजूदा दौर में बहुत ज्यादा क्लब नहीं हैं, लेकिन जिस तरह लोगों की रुचि इसमें बढ़ रही है उससे आयोजनों की भव्यता और बढ़ेगी। इलेक्ट्रॉनिक डांस म्यूजिक की बढ़ती लोकप्रियता ने बॉलीवुड संगीत सितारों को भी हिलाकर रख दिया है। इसका असर अब सिर्फ बड़े शहरों तक नहीं रहा बल्कि अहमदाबाद, गुड़गांव, इंदौर, लखनऊ जैसे शहरों में भी देखने को मिल रहा है। यही वजह है कि बॉलीवुड सितारे भी अपने लाइव शो में ईडीएम को शामिल करने लगे हैं।

कुछ समय पहले इंदौर में पाकिस्तानी कलाकार आतिफ असलम ने डीजे चेतस के साथ मिलकर अपने छह हजार से ज्यादा प्रशंसकों के लिए ईडीएम की प्रस्तुति दी थी। एक ओर दिन रात इस तरह के म्यूजिक को चाहने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। उन्हें संगीत का एक नया बेहतरीन अनुभव भी मिल रहा, वहीं इस म्यूजिक को जीतोड़ कर चाहने के कारण कुछ अपवाद वाली स्थितियां भी सामने आ रही हैं। मसलन, इस तरह के आयोजनों में पश्चिमी रंग ज्यादा होता है और इसमें पात्रता 18 वर्ष से ज्यादा उम्र के युवाओं की रहती है। तो इस तरह के आयोजन में ग्लैमर, ड्रग्स और कुछ ज्यादा ही छूट मिलती है। पिछले साल गोवा में ऐसे ही एक डीजे की मौत ड्रग्स की ज्यादा मात्रा लेने से हो गई थी। गुड़गांव में अमेरिकन युवा लेडी आर्टिस्ट की मृत्यु भी ईडीएम में होने वाले तेज आवाज के शोर से हो गई थी। दिल्ली की फैशन डिजाइनर आंचल अरोड़ा की भी मौत ईडीएम आयोजन में दम घुटने से हो गई थी।